

प्रारंभिक परीक्षा

PRAGATI 2026

संदर्भ

बहुपक्षीय सैन्य अभ्यास PRAGATI 2026 आधिकारिक तौर पर मेघालय के उमरोई सैन्य स्टेशन में शुरू हुआ।

PRAGATI के बारे में

- **संक्षिप्त नाम:** PRAGATI का अर्थ है हिंद महासागर क्षेत्र में विकास और परिवर्तन के लिए क्षेत्रीय सेनाओं की साझेदारी।
- **मेज़बान:** मेघालय में एक प्रमुख संयुक्त प्रशिक्षण नोड, उमरोई में भारतीय सेना द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।
- **भाग लेने वाले राष्ट्र (13 कुल):** भारत प्लस 12 मित्र विदेशी देश:
 - दक्षिण एशिया/आईओआर: भूटान, मालदीव, नेपाल, सेशेल्स, श्रीलंका।
 - दक्षिण पूर्व एशिया (आसियान): कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओस, मलेशिया, म्यांमार, फिलीपींस, वियतनाम।
- **मुख्य उद्देश्य:** आतंकवाद का मुकाबला, अंतरसंचालनीयता, सामरिक सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान करने के लिए एक ढांचा स्थापित करना।

BIS ने हाई-ब्लेंड इथेनॉल और डीएमई-एलपीजी ईंधन के लिए नए मानकों को अधिसूचित किया

संदर्भ

भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) ने आधिकारिक तौर पर दो महत्वपूर्ण ईंधन मानकों को प्रकाशित किया है जिसका उद्देश्य भारत के हरित ऊर्जा संक्रमण को आगे बढ़ाना, कार्बन फुटप्रिंट को कम करना और कच्चे तेल के आयात पर निर्भरता को कम करना है।

हाई-ब्लेंड इथेनॉल मानकों के बारे में (आईएस 19850: 2026)

- **ढांचा:** यह मानक उच्च-सांद्रता वाले इथेनॉल-पेट्रोल मिश्रणों के लिए मापदंडों को निर्दिष्ट करता है, विशेष रूप से E22, E25, E27, और E30 (22% से 30% इथेनॉल तक)।
- **संरचना:** ईंधन गैसोलीन और पूरी तरह से पानी मुक्त (निर्जल) इथेनॉल का मिश्रण है।

डीएमई मिश्रित एलपीजी मानकों के बारे में (आईएस 18698: 2026)

- **ढांचा:** यह मानक डाइमिथाइल ईथर (डीएमई) मिश्रित तरलीकृत पेट्रोलियम गैस (एलपीजी) के संबंध में पुराने 2024 नियमों का स्थान लेता है।
- **डीएमई क्या है?:** डीएमई एक साफ-जलने वाला, सिंथेटिक ईंधन विकल्प है जो एलपीजी के साथ लगभग समान भौतिक और रासायनिक गुणों को साझा करता है, जिससे यह घरेलू और औद्योगिक गैस के लिए एक कुशल सम्मिश्रण एजेंट बन जाता है।
- **उत्पादन मार्ग:** डीएमई दो तरीकों से संश्लेषण गैस (सिनगैस) से निर्मित होता है:
 1. **अप्रत्यक्ष मार्ग:** सिनगैस → मेथनॉल → डीएमई।
 2. **सीधा मार्ग:** सिनगैस → डीएमई।

- **वैश्विक परिदृश्य:** चीन वर्तमान में बाजार पर हावी है, वैश्विक डीएमई उत्पादन क्षमता का लगभग 90% नियंत्रित करता है।

वीनस ऑर्बिटर मिशन

संदर्भ

भारत के आगामी अंतरग्रहीय अन्वेषण कार्यक्रम ने अंतरराष्ट्रीय गति प्राप्त की है और स्वीडन ने आधिकारिक तौर पर वीनस ऑर्बिटर मिशन (VOM) पर साझेदारी की है, जिसे बोलचाल की भाषा में शुक्रयान के रूप में जाना जाता है।

वीनस ऑर्बिटर मिशन के बारे में

- **मिशन का उद्देश्य:** VOM भारत का शुक्र ग्रह का अन्वेषण करने वाला पहला समर्पित वैज्ञानिक मिशन है। इसका उद्देश्य निम्नलिखित की जांच करना है:
 - शुक्र की सतह और उपसतह स्थलाकृति।
 - जटिल वायुमंडलीय गतिशीलता और रसायन विज्ञान।
 - शुक्र के वायुमंडल पर सौर विकिरण और सौर हवाओं का विशिष्ट प्रभाव।
- **प्रक्षेपण यान:** शुक्र ग्रह की ओर पारगमन शुरू करने से पहले अंतरिक्ष यान को प्रारंभिक दीर्घवृत्ताकार पार्किंग कक्षा (ईपीओ) में स्थापित करने के लिए आईएसआरओ के सबसे भारी रॉकेट, प्रक्षेपण यान मार्क-3 (एलवीएम-3) का चयन किया गया है।

वीरा पासी

संदर्भ

1857 के विद्रोह के एक प्रतिष्ठित निम्नवर्गीय व्यक्ति, वीरा पासी की विरासत ने एक बार फिर राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया है।

वीरा पासी के बारे में

- **पहचान और उत्पत्ति:** 11 नवंबर, 1835 को लोधवारी गांव, रायबरेली (उत्तर प्रदेश) में हाशिए पर पड़े पासी (दलित) समुदाय में उनका जन्म हुआ।
- **1857 विद्रोह की भूमिका:** 1857 के विद्रोह के दौरान राणा बेनी माधव बख्श सिंह (शंकरपुर एस्टेट, अवध के शासक) के तहत एक विश्वसनीय सैन्य कमांडर के रूप में कार्य किया।
- **द प्रिज़न रेस्क्यू:** राणा बेनी माधव को ब्रिटिश कैद से बचाने के लिए एक साहसी सशस्त्र छापे को अंजाम देकर पौराणिक दर्जा हासिल किया।
 - ब्रिटिश सरकार ने उनके सिर पर ₹50,000 का भारी इनाम रखा, अंततः उन्हें मार डाला क्योंकि वह अपने शासक की रक्षा करते हुए मर गए।

संबंधित स्वतंत्रता संग्राम के पासी प्रतीक

- **वीरांगना उदा देवी:** एक पासी महिला योद्धा जो 1857 में लखनऊ (सिकंदरा बाग) की घेराबंदी के दौरान पीपल के पेड़ पर चढ़ गई थी और शहीद होने से पहले 30 से अधिक ब्रिटिश सैनिकों की अकेले ही गोली मारकर हत्या कर

दी थी।

- **महाराजा बिजली पासी:** पासी समुदाय के एक प्रारंभिक मध्ययुगीन राजा, जिन्हें अक्सर ऐतिहासिक सबाल्टर्न संप्रभुता और प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में 1857 के प्रतीकों के साथ इस्तेमाल किया जाता था।

थोरियम और भारत की दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा

संदर्भ

2047 तक 100 गीगावॉट परमाणु ऊर्जा मिशन की दिशा में भारत के प्रयास ने दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा के लिए थोरियम आधारित परमाणु ऊर्जा पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित किया है।

ऊर्जा सुरक्षा में थोरियम का महत्व

- **प्रचुर घरेलू संसाधन:** भारत के पास वैश्विक थोरियम भंडार का लगभग 25% हिस्सा है, जो दीर्घकालिक स्वदेशी ईंधन की उपलब्धता सुनिश्चित करता है।
- **यूरेनियम आयात पर निर्भरता कम करना:** बढ़ती वैश्विक यूरेनियम मांग और भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं के कारण अगले 10-15 वर्षों में परमाणु ईंधन आपूर्ति संबंधी जोखिम उत्पन्न हो सकते हैं।
- **थोरियम-HALEU ईंधन मार्ग:** थोरियम-HALEU ईंधन थोरियम के उपयोग को गति देते हुए ईंधन दक्षता, सुरक्षा, अपशिष्ट न्यूनीकरण और प्रसार प्रतिरोध में सुधार कर सकता है।
- **थोरियम मोल्टन सॉल्ट रिएक्टर (TMSR):** TMSR को सतत थोरियम-आधारित बिजली उत्पादन के लिए आदर्श चरण-III रिएक्टर माना जाता है।
- **उच्च ईंधन उपयोग:** पारंपरिक यूरेनियम ईंधन चक्रों की तुलना में थोरियम-U-233 ईंधन चक्र काफी अधिक ऊर्जा निष्कर्षण प्रदान करता है।
- **दीर्घकालिक रणनीतिक लाभ:** थोरियम-आधारित प्रणालियाँ भारत को एक प्रमुख ऊर्जा आयातक से दीर्घकालिक स्वच्छ ऊर्जा उत्पादक बनने में मदद कर सकती हैं।

भारत में वर्तमान परमाणु ऊर्जा परिदृश्य

- **स्थापित क्षमता:** भारत की परमाणु क्षमता 8.78 गीगावॉट है; 2024-25 में 56,681 मिलियन यूनिट का उत्पादन।
- **बिजली की हिस्सेदारी:** भारत की बिजली में परमाणु का योगदान 3% (2024-25 में 3.1%) है।
- **विस्तार योजनाएँ:** 2031-32 तक क्षमता 22.38 गीगावॉट तक पहुंचने का अनुमान है (अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से 700 मेगावाट PHWRs + ~1000 मेगावाट रिएक्टरों की बेड़े की तैनाती)।
- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** भारत के पास 18 देशों के साथ असैन्य परमाणु सहयोग समझौते हैं, जो ईंधन आपूर्ति और रिएक्टर प्रौद्योगिकी साझेदारी का समर्थन करते हैं।

दीर्घकालिक मिशन

- **100 गीगावॉट लक्ष्य:** भारत का लक्ष्य परमाणु ऊर्जा मिशन (बजट 2025-26) के तहत 2047 तक 100 गीगावॉट परमाणु क्षमता हासिल करना है, जो 2070 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन का समर्थन करेगा।
- **वित्तीय सहायता:** परमाणु ऊर्जा मिशन छोटे मॉड्यूलर रिएक्टर (एसएमआर) डिजाइन और तैनाती के लिए

₹20,000 करोड़ आवंटित करता है।

- एसएमआर तैनाती: 2033 तक ≥ 5 स्वदेशी एसएमआर के परिचालन का लक्ष्य।
- बीएआरसी इनोवेशन: अगली पीढ़ी के रिएक्टरों का विकास (बीएसएमआर-200 (200 मेगावाट क्षमता के साथ), एसएमआर-55, हाइड्रोजन उत्पादन के लिए उच्च तापमान गैस-कूलड रिएक्टर 5 मेगावाट)।
- शांति अधिनियम 2025: परमाणु क्षेत्र में विनियमित निजी भागीदारी और निवेश को सक्षम करने वाला नया कानूनी ढांचा।

महाराष्ट्र वेटलैंड मैपिंग पहल

संदर्भ

नेशनल सेंटर फॉर सस्टेनेबल कोस्टल मैनेजमेंट (एनसीएससीएम) ने वेटलैंड्स(आर्द्रभूमि) नियमों के तहत कानूनी सुरक्षा के लिए महाराष्ट्र में 23,415 से अधिक वेटलैंड्स के दस्तावेजीकरण और जमीनी सच्चाई का काम पूरा कर लिया है।

महाराष्ट्र में आर्द्रभूमि वितरण

- प्रमुख आर्द्रभूमि क्षेत्र: छत्रपति संभाजीनगर और नागपुर संभागों में सबसे अधिक आर्द्रभूमि है। (5,196 और 5,086 आर्द्रभूमि)
- प्रमुख जिले: अहमदनगर, नासिक और चंद्रपुर में आर्द्रभूमि की संख्या सबसे अधिक है। (1,596; 1,236; 1,231 आर्द्रभूमि)

आर्द्रभूमि का महत्व

- बाढ़ बफरिंग: आर्द्रभूमि अतिरिक्त वर्षा जल को अवशोषित करती है और शहरी बाढ़ को कम करती है।
- भूजल पुनर्भरण: जलभृतों को फिर से भरने और जल संतुलन बनाए रखने में मदद करें।
- कार्बन और जैव विविधता भूमिका: कार्बन पृथक्करण और समृद्ध जैव विविधता का समर्थन करना।

आर्द्रभूमि संरक्षण ढांचा

- राष्ट्रीय आर्द्रभूमि एटलस: उपग्रह आधारित आर्द्रभूमि मानचित्रण और निगरानी के लिए इसरो-एमओईएफसीसी पहला (2020 में जारी किया गया अद्यतन दशकीय-परिवर्तन संस्करण)
- एनसीएससीएम की भूमिका: पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी) के तहत एनसीएससीएम आर्द्रभूमि मानचित्रण, प्रलेखन और संरक्षण सहायता आयोजित करता है
- आर्द्रभूमि नियम: आर्द्रभूमि (संरक्षण और प्रबंधन) नियम पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 के तहत संरक्षण और निषिद्ध गतिविधियों को विनियमित करते हैं। (2010 में अधिसूचित नियम; 2017 में संशोधित)
- प्रतिबंधित गतिविधियाँ: पुनर्ग्रहण, डंपिंग, स्थायी निर्माण और अनुपचारित निर्वहन निषिद्ध हैं।
- न्यायिक हस्तक्षेप: सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों ने आर्द्रभूमि के सीमांकन और संरक्षण में तेजी लाई।

ऊपरी गंगा बेसिन में जल विद्युत परियोजनाएं

संदर्भ

केंद्र सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय को सूचित किया कि उत्तराखंड के ऊपरी गंगा बेसिन में पहले से चालू या काफी हद तक पूरी हो चुकी सात परियोजनाओं के अलावा किसी भी नई जलविद्युत परियोजना को अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

गंगा बेसिन पर विभिन्न परियोजनाएं

- **टिहरी पंप भंडारण परियोजना:** भागीरथी नदी पर (1,000 मेगावाट; विकास के तहत)
- **तपोवन विष्णुगाड परियोजना:** धौलीगंगा नदी पर (520 मेगावाट; निर्माणाधीन; 2021 ऋषिगंगा बाढ़ के दौरान प्रभावित)
- **विष्णुगाड पीपलकोटी परियोजना:** अलकनंदा नदी पर (444 मेगावाट; निर्माणाधीन)
- **सिंगोली भटवाड़ी परियोजना:** मंदाकिनी नदी पर (99 मेगावाट; चालू किया गया)
- **फाटा ब्यूंग परियोजना:** मंदाकिनी नदी पर (76 मेगावाट; चालू किया गया)
- **मधमहेश्वर परियोजना:** ऊपरी गंगा बेसिन में लघु जल विद्युत परियोजना (चालू हुई)
- **कैलगंगा-II परियोजना:** ऊपरी गंगा बेसिन में लघु जल विद्युत परियोजना (चालू की गई)

ऊपरी गंगा बेसिन

- **भागीरथी नदी:** गोमुख के पास गंगोत्री ग्लेशियर से निकलती है।
- **अलकनंदा नदी:** उत्तराखंड में सतोपंथ और भगीरथ खड़क ग्लेशियरों के पास से निकलती है।
- **पंचप्रयाग**
 - **विष्णुप्रयाग:** अलकनंदा और धौलीगंगा नदियों का संगम।
 - **नंदप्रयाग:** अलकनंदा और नंदकिनी नदियों का संगम।
 - **कर्णप्रयाग:** अलकनंदा और पिंडर नदियों का संगम।
 - **रुद्रप्रयाग:** अलकनंदा और मंदाकिनी नदियों का संगम।
 - **देवप्रयाग:** भागीरथी और अलकनंदा नदियों का संगम; यहां से नदी को आधिकारिक तौर पर गंगा कहा जाता है।
- **विशेषताएं:** उच्च जलविद्युत क्षमता, हिमनद उत्पत्ति और पारिस्थितिक रूप से नाजुक इलाके के साथ खड़ी-ढाल हिमालयी नदियाँ।

ट्रिनिटी परमाणु-परीक्षण मलबे में पाया गया नया क्रिस्टल

संदर्भ

वैज्ञानिकों ने ट्रिनिटाइट में क्लैथ्रेट नामक एक नई दुर्लभ क्रिस्टल संरचना की खोज की है।

नए क्रिस्टल के बारे में

- **यह क्या है?:** टाइप-I क्लैथ्रेट परिवार से संबंधित नए पहचाने गए कैल्शियम-कॉपर-सिलिकॉन क्रिस्टल।

- सिलिकॉन परमाणु पिंजरे जैसे ढांचे का निर्माण करते हैं जो अन्य तत्वों को अंदर फंसाते हैं जिसे क्लैथ्रेट संरचना कहा जाता है
- **पाया गया:** ट्रिनिटी विस्फोट के दौरान निर्मित ट्रिनिटाइट की तांबा-समृद्ध किस्म, लाल ट्रिनिटाइट के भीतर खोजा गया।
 - ट्रिनिटी परीक्षण संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा 16 जुलाई 1945 को मैनहट्टन परियोजना के तहत न्यू मैक्सिको में किया गया पहला परमाणु हथियार परीक्षण था; इस विस्फोट से रेडियोधर्मी कांच बना जिसे "ट्रिनिटाइट" कहा जाता है।
- **गठन की स्थिति:** परमाणु विस्फोट के दौरान उत्पन्न अत्यधिक तापमान और दबाव के तहत गठिता ($>1,500\text{ }^{\circ}\text{C}$ और $\sim 8\text{ GPa}$ दबाव)
- **मेटास्टेबल प्रकृति:** क्रिस्टल मेटास्टेबल है, जिसका अर्थ है कि यह केवल तेजी से बदलती चरम स्थितियों में ही मौजूद हो सकता है।
- **क्वासिक्रिस्टल के साथ संबंध:** शोधकर्ताओं ने पाया कि क्रिस्टल और पहले खोजे गए ट्रिनिटी क्वासिक्रिस्टल एक ही घटना में बने लेकिन विभिन्न संरचनात्मक परिवारों से संबंधित हैं।
- **वैज्ञानिक महत्व:** दिखाता है कि कैसे चरम वातावरण दुर्लभ सामग्री बना सकता है जो पारंपरिक प्रयोगशालाओं में आसानी से उत्पादित नहीं होता है।
- **संभावित महत्व:** निष्कर्ष नई सिंथेटिक सामग्री विकसित करने और चरम स्थितियों में पदार्थ की समझ में सुधार करने में मदद कर सकते हैं।

अरुणाचल कीवी

संदर्भ

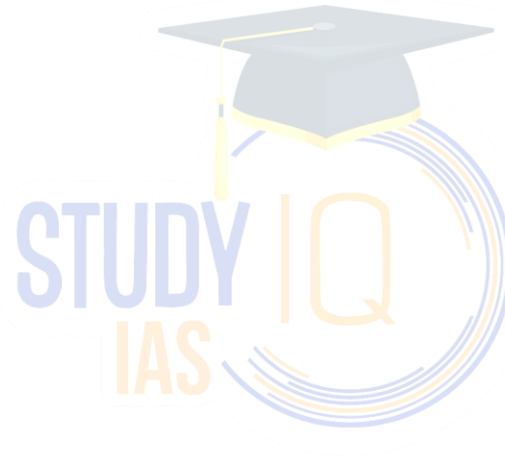
केंद्रीय पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास (DoNER) और संचार मंत्री ने मिशन "अरुणाचल कीवी: अरुणाचल प्रदेश की यूएसपी" लॉन्च किया।

"अरुणाचल कीवी: अरुणाचल प्रदेश की यूएसपी" के बारे में

- **रणनीतिक परिचय:** 167 करोड़ रुपये का क्लस्टर-आधारित खेती और मूल्य-श्रृंखला विकास कार्यक्रम "संपूर्ण-सरकारी" अभिसरण मॉडल के माध्यम से लागू किया गया है।
- **"ब्रांड नॉर्थ ईस्ट" ब्लूप्रिंट:** प्रत्येक पूर्वोत्तर राज्य के लिए अद्वितीय एक विशिष्ट प्रमुख उत्पाद को अनिवार्य करता है:
 - अरुणाचल प्रदेश: ऑर्गेनिक कीवी
 - सिक्किम: जैविक राज्य
 - मेघालय: लकाडोंग हल्दी
 - मिजोरम: अदरक
 - त्रिपुरा: रानी अनानास
 - नागालैंड: कॉफी

अरुणाचल ऑर्गेनिक कीवी के बारे में

- **बागवानी प्रमुखता:** यह राज्य की प्रमुख नकदी फसल है; अरुणाचल प्रदेश अकेले ही भारत के कुल कीवी उत्पादन (7,050+ मीट्रिक टन वार्षिक) में 50% से अधिक का योगदान देता है।
- **कृषि-जलवायु परिस्थितियाँ:** समशीतोष्ण क्षेत्रों, अच्छी तरह से परिभाषित मौसमों और लोअर सुबनसिरी जिले (जीरो घाटी) जैसे उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों की कार्बनिक पदार्थों से भरपूर उपजाऊ मिट्टी में पनपता है।
- 2020 में, अरुणाचल प्रदेश उत्तर पूर्वी क्षेत्र के लिए मिशन ऑर्गेनिक वैल्यू चेन डेवलपमेंट (MOVCD-NER) के तहत कीवी की खेती के लिए जैविक प्रमाणन प्राप्त करने वाला भारत का पहला राज्य बन गया।



मुख्य परीक्षा

न्यायपालिका की मौखिक टिप्पणियाँ और संस्थागत सीमाएँ

संदर्भ

अदालत की सुनवाई के दौरान मुख्य न्यायाधीश की मौखिक टिप्पणियों और उसके बाद के स्पष्टीकरण ने डिजिटल युग में न्यायिक भाषण की संस्थागत सीमाओं पर बहस को फिर से शुरू कर दिया है।

मौखिक टिप्पणी बनाम न्यायिक आदेश क्या हैं?

- मौखिक टिप्पणियाँ तर्कों का परीक्षण करने के लिए सुनवाई के दौरान की गई अनौपचारिक टिप्पणियाँ हैं; कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं।
- न्यायिक आदेश/निर्णय न्यायालय के औपचारिक, लिखित, तर्कसंगत और कानूनी रूप से बाध्यकारी निर्णय होते हैं।
- डिजिटल युग में, मौखिक टिप्पणियाँ तुरंत फैल जाती हैं, अक्सर कोई भी लिखित निर्णय सुनाने से पहले जनता की राय को आकार देती हैं।
- यह अदालत के आदान-प्रदान और आधिकारिक न्यायिक घोषणा के बीच की रेखा को धुंधला कर देता है।

संवैधानिक और कानूनी ढांचा

- **न्यायिक जीवन के मूल्यों का पुनर्कथन (1997):** सुप्रीम कोर्ट के दिशानिर्देश न्यायाधीशों को अदालतों के समक्ष आने वाले मामलों पर सार्वजनिक बहस या टिप्पणियों से बचने की आवश्यकता होती है।
- **न्यायिक अनुशासन (मद 8):** न्यायाधीशों को राजनीतिक या संवेदनशील मुद्दों पर टिप्पणी करने से रोकता है जो निष्पक्षता को प्रभावित कर सकते हैं।
- **बेंजामिन कार्डोजो का न्यायिक मानक:** बेंजामिन कार्डोजो ने इस बात पर जोर दिया कि निर्णय कानूनी सिद्धांतों, मिसाल और संवैधानिक मूल्यों द्वारा निर्देशित होना चाहिए, न कि व्यक्तिगत भावनाओं द्वारा।
 - **मूल सिद्धांत:** बेंच की टिप्पणियों को कानूनी तर्कों का परीक्षण करना चाहिए, न कि व्यक्तिगत राय के लिए मंच बनना चाहिए।
- **पद की शपथ (तीसरी अनुसूची):** न्यायाधीश निष्पक्ष आचरण सुनिश्चित करते हुए "बिना किसी डर या पक्षपात, स्नेह या दुर्भावना के" कर्तव्यों का पालन करने की शपथ लेते हैं।
- **अनुच्छेद 121:** संसद महाभियोग की कार्यवाही के अलावा सुप्रीम कोर्ट या हाई कोर्ट के जजों के आचरण पर चर्चा नहीं कर सकती है।
- **अनुच्छेद 211:** न्यायिक आचरण के संबंध में राज्य विधानसभाओं पर लगाया गया इसी तरह का प्रतिबंध।
 - अनुच्छेद 121 और 211 न्यायपालिका और विधायिका के बीच आपसी संस्थागत संयम के माध्यम से न्यायिक स्वतंत्रता को बनाए रखते हैं।

उल्लेखनीय उदाहरण: संस्थागत चिंताओं को उठाते हुए मौखिक टिप्पणियाँ

- **जस्टिस एसए बोबडे, भारत (2021):** बलात्कार के एक मामले में जमानत की सुनवाई के दौरान, उन्होंने पूछा कि क्या आरोपी "पीड़िता से शादी करेगा," यौन हिंसा और पीड़ित की गरिमा को महत्वहीन बनाने के लिए व्यापक आलोचना हुई।

- इस प्रकरण ने पीठ की ओर से की गई न्यायिक टिप्पणियों की संवेदनशीलता और उपयुक्तता पर बहस छेड़ दी।
- **सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़, भारत (2023):** विवाह समानता मामले में, सुनवाई के दौरान कुछ मौखिक टिप्पणियां बाद में दिए गए अंतिम लिखित निर्णय से भिन्न थीं, जो इस बात को पुष्ट करती हैं कि मौखिक टिप्पणियाँ बाध्यकारी न्यायिक तर्क का गठन नहीं करती हैं।
- **सीजेआई सूर्यकांत, भारत (2025):** वरिष्ठ अधिवक्ताओं के पदनाम से संबंधित टिप्पणियों ने न्यायिक भाषा, अदालत कक्ष संयम और बेंच भाषण की संवैधानिक सीमाओं पर चर्चा को फिर से शुरू कर दिया।

कैसे प्रौद्योगिकी ने दांव बदल दिया है

- **त्वरित प्रवर्धन:** अदालत की सुनवाई के दौरान की गई मौखिक टिप्पणियां अक्सर घंटों के भीतर सोशल मीडिया पर ट्रेंड करती हैं।
- **समय से पहले सार्वजनिक धारणा:** अंतिम लिखित निर्णय सुनाने से पहले जनता की राय को अक्सर आकार दिया जाता है।
- **प्रतिष्ठा को नुकसान:** संस्थानों और व्यक्तियों को उन टिप्पणियों से स्थायी प्रतिष्ठा क्षति का सामना करना पड़ सकता है जो कभी भी आधिकारिक आदेश का हिस्सा नहीं बन सकती हैं।
- **स्पष्टीकरण के लिए दबाव:** अदालतों को मौखिक टिप्पणियों को स्पष्ट करने की मांग का सामना करना पड़ रहा है, बावजूद इसके कि इस तरह के स्पष्टीकरणों की कोई औपचारिक कानूनी स्थिति नहीं है।
- **सीमाओं का धुंधलापन:** खोजपूर्ण अदालती आदान-प्रदान और आधिकारिक न्यायिक घोषणाओं के बीच का अंतर सार्वजनिक धारणा में तेजी से अस्पष्ट होता जा रहा है।

आगे की राह

- **आंतरिक दिशानिर्देश:** सर्वोच्च न्यायालय 1997 के पुनर्कथन और बैंगलोर सिद्धांतों पर आधारित बेंच भाषा के लिए विशिष्ट मानकों को संहिताबद्ध कर सकता है।
- **मीडिया साक्षरता:** बार एसोसिएशन और मीडिया काउंसिल मौखिक टिप्पणियों की रिपोर्टिंग पर साझा प्रोटोकॉल विकसित कर सकते हैं।
- **न्यायिक प्रशिक्षण:** डिजिटल प्रवर्धन के परिणामों पर राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी में संवेदीकरण कार्यक्रम नए न्यायाधीशों को उन्मुख करने में मदद करेंगे।
- **संस्थागत अनुशासन, सेंसरशिप नहीं:** लक्ष्य न्यायाधीशों को चुप कराना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि न्यायिक अधिकार का प्रयोग तर्कपूर्ण लिखित आदेशों के माध्यम से किया जाता है - जहां जवाबदेही, मिसाल और अपील सभी काम करते हैं - न कि अदालत की टिप्पणियों के माध्यम से जो उन सुरक्षा उपायों में से कोई भी ले जाते हैं।